

﴿ ٥ آياتها ﴾ ﴿ ١١١ سُورَةُ اللَّهُبِ مَكِّيَّةٌ ٦ ﴾ ﴿ ١ رُكُوعًا ﴾

सूरए लहब मक्किया है, इस में पांच आयतें और एक रूकूअ है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ۝ ١ مَّا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ۝ ٢

तबाह हो जाएं अबू लहब के दोनों हाथ और वोह तबाह हो ही गया² उसे कुछ काम न आया उस का माल और न जो कमाया³

سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝ ٣ وَامْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝ ٤ فِي

अब धंसता है लपट मारती आग में वोह और उस की जोरू⁴ लकड़ियों का गड्ढा सर पर उठाए उस

جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ ۝ ٥

के गले में खजूर की छाल का रस्सा⁵

﴿ २ आياتها ﴾ ﴿ ११२ سُورَةُ الْإِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ ٢٢ ﴾ ﴿ १ رُكُوعًا ﴾

सूरए इख्लास मक्किया है, इस में चार आयतें और एक रूकूअ है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

चाहे दुनिया में रहे, चाहे उस की लिका कबूल फरमाए। उस बन्दे ने लिकाए इलाही इख्तियार की। येह सुन कर हज़रते अबू बक्र رضي الله تعالى عنه ने अर्ज किया : आप पर हमारी जानें, हमारे माल, हमारे आबा, हमारी औलादें सब कुरबान। 1 : "सूरए अबी लहब" मक्किया है, इस में एक रूकूअ, पांच आयतें, बीस कलिमे, सततर हर्फ हैं। शाने नुज़ूल : जब नबिये करीम صلّى الله تعالى عليه وسلم ने कोहे सफ़ा पर अरब के लोगों को दा'वत दी हर तरफ़ से लोग आए और हुज़ूर ने उन से अपने सिद्को अमानत की शहादतें लेने के बा'द फरमाया : "إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ" इस पर अबू लहब ने हुज़ूर से कहा था कि तुम तबाह हो जाओ, क्या तुम ने हमें इस लिये जम्अ किया था। इस पर येह सूत शरीफ़ नाज़िल हुई और अल्लाह तआला ने अपने हबीबे अकरम صلّى الله تعالى عليه وسلم की तरफ़ से जवाब दिया : 2 : अबू लहब का नाम अब्दुल उज़्ज़ा है। येह अब्दुल मुत्तलिब का बेटा और सय्यदे आलम صلّى الله تعالى عليه وسلم का चचा था, बहुत गोरा खूब सूत आदमी था, इसी लिये इस की कुन्यत अबू लहब है और इसी कुन्यत से वोह मशहूर था। दोनों हाथों से मुराद इस की जात है। 3 : या'नी उस की औलाद। मरवी है कि अबू लहब ने जब पहली आयत सुनी तो कहने लगा कि जो कुछ मेरे भतीजे कहते हैं अगर सच है तो मैं अपनी जान के लिये अपने माल व औलाद को फ़िदया कर दूंगा, इस आयत में इस का रद फरमाया गया कि येह खयाल गलत है, उस वक्त कोई चीज़ काम आने वाली नहीं। 4 : उम्मे जमील बित्ने हर्ब बिन उमय्या अबू सुफयान की बहन जो रसूले करीम صلّى الله تعالى عليه وسلم से निहायत इनाद व अदावत रखती थी और बा वुजूदे कि बहुत दौलत मन्द और बड़े घराने की थी लेकिन सय्यदे आलम صلّى الله تعالى عليه وسلم की अदावत में इन्तिहा को पहुँची थी कि खुद अपने सर पर कांटों का गड्ढा ला कर रसूले करीम صلّى الله تعالى عليه وسلم के रास्ते में डालती ताकि हुज़ूर को और हुज़ूर के अस्थाब को ईजा व तकलीफ़ हो और हुज़ूर की ईजा रसानी उस को इतनी प्यारी थी कि वोह इस काम में किसी दूसरे से मदद लेना भी गवारा न करती थी। 5 : जिस से कांटों का गड्ढा बांधती थी, एक रोज़ येह बोझ उठा कर ला रही थी कि थक कर आराम लेने के लिये एक पथर पर बैठ गई, एक फ़िरिश्ते ने ब हुक्मे इलाही उस के पीछे से उस के गठ्ठे को खींचा वोह गिरा और रस्सी से गले में फांसी लग गई और वोह मर गई। 1 : "सूरए इख्लास" मक्किया व बक़ौले मदनिया है, इस में एक रूकूअ, चार या पांच आयतें, पन्दरह कलिमे, सेंतालीस हर्फ हैं। अहादीस